बी. ए. पार्ट - I हिन्दी प्रतिष्ठा अध्ययन सामग्री

डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

पत्र : द्वितीय/ प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

दिनांक 27.03.2021

विद्यापति की भक्ति-भावना :-

विद्यापति मूल रूप से शृंगारी कवि हैं, तथापि उनके काव्य में भक्ति-भाव की मार्मिक व्यंजना पाई जाती है। इनका शृंगार-वर्णन भी राधाकृष्ण-विषयक है। अतः लोगों की ये धारणा है कि वे वैष्णव रहे होंगे। बंगाल में भी यही धारणा थी। शृंगार वर्णन के साथ-साथ विद्यापति ने प्रार्थना और नचारी की भी रचना की है। इस में शिव और शक्ति की ~~स्तुती स्तुति~~ स्तुतियां विषयक पद हैं। इनके पिता शैव थे। कहा जाता है कि शिव के उपासना के उपरान्त ही उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। ऐसी स्थिति में इनका शैव होना भी संभव है। इनका निम्नांकित एक पद इनके शैव होने की पुष्टि भी करता है —

"आन चान गन हरि कमलासन, सब परिहरि हम देवा।
भक्त-बछल प्रभु बान महेसर, जानि कएलि तुअ सेवा॥

कोई चन्द्र की पूजा करते हैं, कोई विष्णु की पूजा करते हैं, किन्तु मैंने सबको छोड़ दिया है। हे बाण-महेश्वर, भक्तवत्सल जानकर मैंने तुम्हारी ही सेवा की है।

बाणेश्वर-महादेव 'बिसफी' से उत्तर 'भेड़वा' नामक गाँव में आज भी का मंदिर है। कहते हैं कि वे इसी महादेव की उपासना करते थे। साथ ही इनके द्वारा बनाए गए अनेक नचारियाँ मिथिला के गाँव-गाँव में काफी लोकप्रिय हैं। नचारी विशेष रूप से पुरूष गाते हैं और पदावली स्त्रियाँ। कहा जाता है कि स्वयं महादेव इनके ऊपर खुश थे। वे धरती पर 'उगना' के रूप में अवतरित हो इनके यहाँ नौकरी किए। इन सब बातों से यह सिद्ध होता है कि वे वैष्णव नहीं, शैव थे। परन्तु, ये शिव और विष्णु को एक ही रूप की दो कलाएँ मानते थे। इनका यह पद्य है—

"भल हरि भल हर भल तुअ कला।
खन पितबसन खनहि बघछला॥"

साथ-ही-साथ देवीयों - खासकर - 'दुर्गा' की ~~स्तुती~~ स्तुति इन्होंने जिस लगन से की है इनको कुछ लोग शाक्त भी मानते हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि ये शिव, विष्णु और चंडी — तीनों को मानते थे, पर किसी एक सम्प्रदाय के अनुयायी नहीं थे। इन्होंने गंगा की

भी अनेक स्तुतियाँ लिखी है।

अर्थात् कहा जा सकता है कि विद्यापति किसी खास संप्रदाय को नहीं मानते थे। वे सभी देवी-देवताओं को समान आदर की दृष्टि से देखते थे।

विद्यापति के पदों में भक्ति-भावना का पूर्ण प्रकर्ष मिलता है — उनमें दैन्य, समर्पण, अनन्यता, इष्टदेव की वत्सलता, महिमा-वर्णन आदि भक्ति के समस्त अवयवों का निरूपण उपलब्ध है। विद्यापति की भक्ति-भावना के अंतर्गत हमें एक सच्चे भक्त के हृदय का पूर्ण निवेदन दिखाई पड़ता है। सच्चे भक्तों की भाँति उन्होंने सभी देवी-देवताओं की भक्ति करके सबके प्रति आस्था-भाव व्यक्त किया है। उन्होंने दुर्गा, गंगा, कृष्ण के अलावे जानकी की भी स्तुति की है। यह कथन सर्वथा सत्य है कि विद्यापति के पदों में भक्ति-भावना का पूर्ण प्रकर्ष दृष्टिगोचर होता है तथा इनकी भक्ति भावना सर्वथा सात्विक है।